लॉक डाउन से ठहर गई ज़िंदगी

गिरजा ठाकुर
भिलाई, छत्तीसगढ़

कोविड-19 यानि कोरोना वायरस निश्चित ही आज पूरे विश्व के जनजीवन को अपने काल रूपी प्रकोप में ले रखा है। पूरी दुनिया इससे बचने का उपाय ढूंढ रही है, लेकिन अभी तक किसी को भी अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। फिलहाल इस वायरस से लॉक डाउन कर, सोशल डिस्टेंसिंग अपनाकर, सिनेटाइज कर, घर में रहकर और जन जागरण के माध्यम से ही बचा जा सकता है। इसीलिए दुनिया के सभी देश इसी मंत्र को अपनाकर इसके खिलाफ जंग लड़ रहे हैं। लेकिन इसमें अपेक्षित सफलता मिलती नहीं दिख रही है। जिस प्रकार से लोगों के संक्रमित होने और और मौत का आंकड़ा बढ़ता दिख रहा है, वह चिंता का विषय है।

भारत में भी कोरोना का प्रकोप रौद्र रूप लेता जा रहा है। लगातार बढ़ते मरीज़ों और मौत के आंकड़ों ने चिंता बढ़ा दी है। भारत में भी लॉक डाउन का सख्ती से पालन करवाया जा रहा है। इसके कारण देश में सभी तरह की गतिविधियां ठप्प पड़ गई हैं। सभी तरह के यातायात बंद हैं तो वहीँ आर्थिक गतिविधियां भी बंद पड़ी हैं। इस महामारी ने हमारे दैनिक जीवन को बहुत ज्यादा कठिनाइयों व समस्याओं से भर दिया है। कल तक जो संसाधन आसानी से मिल जाते थे, आज उन्हीं संसाधनों के उपयोग करने के लिए मूल्य से अधिक कीमत चुकानी पड़ रही है।

Source: Google

वास्तव में इस महामारी ने हमारे दैनिक जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। औद्योगिक गतिविधियां ठप्प हो जाने से आर्थिक नुकसान बढ़ता जा रहा है। जिससे मध्यमवर्गीय परिवार की स्थिति ख़राब होती जा रही है तो वहीं दैनिक जीवनयापन करने वाले दिहाड़ी मजदूरों के सामने तो समस्याओं का पहाड़ सा टूट पड़ा है। हालांकि सरकार के साथ साथ बहुत सी स्वयंसेवी संस्थाएं ज़रूरतमंदों की मदद को आगे आईं हैं और उनके खाने पीने की व्यवस्था कर रही हैं, जो सराहनीय है।

लेकिन इसके साथ साथ इस बिमारी ने समस्त मानव जीवन को यह संदेश भी दे दिया कि हमें स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए, स्वच्छता संबंधी नियमों का निरंतर पालन करके ही हम न केवल स्वयं को स्वस्थ्य और सुरक्षित रख सकते हैं बल्कि इस पृथ्वी को भी हरा भरा बना सकते हैं। शायद मानव इसी मंत्र को भूल गया था, जिसे प्रकृति ने याद दिला दिया।